Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

संगीतः- परिभाषा, अर्थ व महत्व

Reenu Sharma*

M. A. Music, (Net, UGC)

शोध लेख :– संगीत एक ललित कला हैं। सगींत एक इस प्रकार की कला है जो मानव को आलौकिक सुख की अनुभूति कराती है। संगीत के माध्यम से व्यक्ति अपने समस्त दुःखों को भूलकर केवल आनन्द अनुभव करता हैं। आज के इस वैज्ञानिक युग में तो संगीत मनुष्य के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी बनता जा रहा हैं। अब तो मनोरोगियों का ईलाज भी संगीत की सहायता से किया जाता है। संगीत अब केवल मनोरजंन का साधन ही नहीं रह गया है बल्कि हमारे जीवन की वह आवश्यक कड़ी बन गया हैं, जिसकी सहायता से हम प्रत्येक कष्टों का निवारण कर सकते है और सुख की प्राप्ति कर सकते हैं।

मुख्य घटक :– संगीत की परिभाषा, अर्थ, प्रकार, उत्पति, संगीत एवं धर्म, संगीत द्वारा एकता का प्रचार, संगीत शिक्षा, महत्व, निष्कर्ष।

----------X----------

1). संगीत की परिभाषा :–

संगीत अति महत्वपूर्ण कलाओं में एक है। जो कि मानव मन का रंजन कर उसे आलौकिक सुख प्राप्त करता है अर्थात संगीत वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने सभी दुःखों को भूलकर आलौकिक आनन्द की अनुभूति करता है। संगीत सबसे प्राचीन कला है। जब मानव ने भाषा नहीं सीखी थी तो भी किसी न किसी रूप में संगीत था। आदि–काल से ही मानव अपने उद्‌गार, खुशी आदि को गुनगुनाकर व्यक्त करता आया है।

परिभाषाः– ''गीत वाद्य तथा नृत्य त्रंय संगीत मुच्यते''।

शांरगदेव जी ने अपने ग्रंथ संगीत रत्नाकर में संगीत की परिभाषा देते हुए कहा है कि –

गायन, वादन व नृत्य तीनों कलाओं का समावेश संगीत कहलाता है।

प्राचीन काल में संगीत से अभिप्राय केवल गायन कला से ही माना जाता था उस समय गायन विद्या को ही प्राथमिकता दी जाती थी और वहीं सगीत का माध्यम मानी जाती थी।

मध्यकाल में गायन, वादन व नृत्य तीनों ही कलाएं प्रयोग में आने लगी और तीनों कलाओं का समावेश ही संगीत कहलाया।

आधुनिक काल में ये तीनों ही कलांए एक–दूसरे पर निर्भर हो गई है अर्थात गायन के बिना वादन व वादन के बिना गायन अधुरा है और इन दोनों के बिना नृत्य की क्रिया मुक प्रदर्शित होती है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि संगीत में तीनों कलाओं का समावेश अति आवश्यक है।

संगीत का अर्थ :–

संगीत के लिए अंग्रेजी में म्यूजिक शब्द का प्रयोग होता है। म्यूजिक शब्द फ्रेंच भाषा के म्यूज से बना है जिसका अर्थ है गाना या बजाना। पं0 ओकांरनाथ ठाकुर ने संगीत शब्द का अर्थ इस प्रकार बताया हैः–

''आजकल हम लोग संगीत को उसी अर्थ में समझने लगे हैं जिसमें अंग्रेजी का डनेपब शब्द समझा जाता है,– वह अर्थ है गायन व वादन। साधारणतः लोगों में यही धारणा है कि संगीत का अर्थ है केवल गाना या बजाना इसमें नृत्य को स्थान नहीं दिया जाता है। ''

परन्तु शांरगदेव जी के अनुसार गायन, वादन व नृत्य तीनों कलाओं का समावेश ही संगीत कहलाता है उन्होनें अपने ग्रंथ संगीत रत्नाकर में तीनों कलाओं को समान महत्व दिया हैं।

''सम्यग् रूपेण गीयते इति संगीतम्''

अर्थात जो सब प्रकार से गाया जाए वह संगीत हैं। इसमें तीनों कलाओं का मिश्रण होना आवश्यक है। '' संगीत शब्द गीत शब्द में सम उपसर्ग लगाकर बना है सम का अर्थ है अच्छा और गीत का अर्थ है गायन अर्थात जो आलौकिक सुख की प्राप्ति करवाए वह भली भांति गाया हुआ गीत संगीत है।

सही मायने में संगीत का अर्थ तीनों कलाओं के मिश्रण से जो मानव मन का रंजन कर आनन्द की अनुभूति करवाएं वह संगीत है।

संगीत के प्रकार :–

संगीत दो प्रकार का माना जाता है।

www.ignited.in

1. **शास्त्रीय संगीत :–**

जिस संगीत में गायन, वादन व नृत्य के कुछ निर्धारित नियम होते हैं और उनका पालन करना संगीत के लिए आवश्यक होता है जिसके कारण संगीत का रूप विकृत नहीं होता है अर्थात वह संगीत जिसमें कुछ निर्धारित नियमों का पालन किया जाता है और उन बंधनों में ही कलाकार द्वारा कला का प्रदर्शन किया जाता है शास्त्रीय संगीत कहलाता है।

2. **लोक संगीत :–**

लोक संगीत में शास्त्रीय संगीत की तरह कोई बंधन नहीं होता और न ही कोई निर्धारित नियम होते है। लोक संगीत का उददेश्य केवल मन को आनन्द प्रदान करना है। अर्थात आम बोल–चाल की भाषा में प्रयोग किया जाने वाला संगीत लोक संगीत कहलाता है।

संगीत की उत्पतिः–

संगीत की उत्पति के विषय में भी अनेक मतभेद पाए जाते है। ऐसा माना जाता है कि संगीत का निर्माण ब्रह्मा ने किया तथा उसे शिवजी को दिया। शिव से ये सरस्वती को मिला, सरस्वती से नारद को तथा नारद ने इसका प्रचार गांधर्वो, किन्नरों आदि में किया व इस प्रकार संगीत प्रसारित होता गया।

पं0 दामोदर के अनुसार संगीत की उत्पति पक्षियों से हुई। पं0 दामोदर जी ने सात स्वरों की उत्पति इस प्रकार बताई है– मोर से सा, चातक से रे, बकरा से ग, कौआ से म, कोयल से प, मेंढक से ध, हाथी से नि स्वरों की उत्पति हुई।

फ्रायड के अनुसार संगीत का जन्म एक शिशु के समान मनोवैज्ञानिक आधार पर हुआ। जिस प्रकार एक शिशु हंसना, रोना अपने आप ही सीख जाता है उसी प्रकार संगीत का प्रादुर्भाव मानव में मनोविज्ञान के अनुसार हुआ।

कुछ मतों के अनुसार जब मानव को भूख तथा प्यास महसूस हुई होगी, तभी उसे अपने अंदर संगीत की हलचल महसूस हुई होगी। कुछ विद्वानों के मत में संगीत का जन्म ओम् से हुआ है।

अतः कहा जा सकता है कि संगीत के जन्म के संबंध में काई ऐतिहासिक तथ्य प्रापत नहीं हुए है जो हैं उनमें काल्पनिकता अधिक है। अतः हम कह सकते हैं कि संगीत की उत्पति मानव के विकास के साथ–साथ हुई।

संगीत एवं धर्मः–

संगीत एवं धर्म अर्थात दोनों के सम्बन्ध में अगर चर्चा की जाए तो प्रत्येक धर्म में संगीत का बहुत अधिक महत्व रहा है। प्रत्येक धर्म में कोई भी कार्य आरम्भ करने से पहले अपने भाव संगीत द्वारा ही प्रकट किए जाते है। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान में अराधना का माध्यम संगीत ही होता है। किसी भी धर्म में कोई भी संस्कार हो (चाहे खुशी का अवसर हो या दुःख का) प्रत्येक संस्कार में संगीत के द्वारा ही अपने भाव प्रकट किए जाते है। प्रत्यके धर्म में संगीत बहुत पहले से ही मौजूद है इसका जीता जागता प्रमाण प्रत्येक धर्म में संगीत के जन्म से सम्बन्धित अनेक कथाओं का पाया जाना है।

अतः हम कह सकते है कि संगीत और धर्म में संबंध प्राचीन समय से ही चला आ रहा है।

संगीत द्वारा एकता का प्रचार :–

संगीत ही एक ऐसा माध्यम माना जाता है जो जाति–पति, धर्म, भाषा आदि भेदभावों को मिटाकर एकता का प्रचार करता है।

डा0 शंकर लाल मिश्र जी के अनुसार ''भारत मे समय–समय पर जन साधारण को धर्म–आध्यात्म, भक्ति तथा अन्य प्रकार की उपदेशात्मक शिक्षा तथा प्रेरणा संगीत द्वारा दी जाती रही है। आज भी मन्दिर, गुरूद्वारों, गिरिजाघरों में या अन्य धार्मिक स्थानों में उपदेश से पूर्ण संगीत होता है।''

ये तथ्य बिल्कुल एकता का प्रतीक है क्योंकि मन्दिरों, गुरूद्वारों आदि में प्रयोग होने वाले संगीत में कोई भी धर्म या जाति का व्यक्ति बिना किसी रोक–टोक के इसे सुन भी सकता है व इसका आनन्द भी ले सकता है।

संगीत से बालक में ऐसे गुण आ जाते है जिनसे वह भौतिक लाभ और आध्यात्मिक मूल्यों को समझने में समर्थ हो जाता है। संगीत के द्वारा समाज में से वर्ग विषमता को दूर कराकर एक आदर्श राम–राज्य की स्थापना की जा सकती है। इस प्रकार संगीत के द्वारा एकता का प्रचार प्रसार किया जा सकता है।

संगीत शिक्षा :–

संगीत की शिक्षा का अर्थ केवल स्वर ताल युक्त धुनों या रागों को सिखाना मात्र नहीं है वरन् सारगार्भित रूप में संगीत के साधना पक्ष में विद्यार्थी की श्रद्धा व आस्था उत्पन्न करना, संगीत के प्रयोगों के प्रति विशाल दृष्टिकोण अपनाते हुए भी उसके लालित्य एवं रस तत्व के प्रति सचेत रहना तथा संगीत के

उचित विकास के लिए प्रयत्नशील रहना, वैज्ञानिक प्रगति के युग में वैज्ञानिक संयंत्रो का आश्रय लेते हुए तथा संगीत के मनोवैज्ञानिक प्रयोगों एवं वैज्ञानिक विचारशीलता को अपनाते हुए भी उसके सांस्कृतिक महत्व की उपेक्षा न करना आदि भी अत्यन्त आवश्यक है।

डा0 वि0 रा0 आठवले के अनुसार :: संगीत शिक्षा का अर्थ अनुकरण नहीं बल्कि व्यक्तित्व का मुक्त विकास करना और स्वतंत्र विचार के लिए उद्धत करना ही शिक्षा का उद्देश्य है अर्थात शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र में ऐसे गुणों के निर्माण और विकास को सहायता देना है जिसे प्रजातांत्रिक, सामाजिक माध्यम महत्व देता है।''

संगीत शिक्षा आज महत्वपूर्ण मानी जाने लगी है। सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों में संगीत एक प्रमुख विषय के रूप में माना जाने लगा है।

संगीत कला से वंचित व्यक्ति को जगत् में भार स्वरूप मानते हुए किसी आचार्य ने कहा है–

''संगीत, साहित्य, कला विहिनः

साक्षात् पशुः पुच्छ विषाण हीनः।।''

www.ignited.in

अर्थात जिसे संगीत कला की महता नहीं पता वह व्यक्ति संसार में पशु के समान है।

आज संगीत इतना प्रचलित विषय हो गया है कि संगीत छात्रों के लिए वार्षिक, अर्धवार्षिक या द्विवार्षिक अर्थात सैमेस्टर प्रणाली द्वारा या गैर सैमेस्टर प्रणाली द्वारा परीक्षाएं आयोजित की जाती है। जो कि संगीत शिक्षा के लिए लाभदायी सिद्ध होती है। इससे विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रूचि बढती है।

महत्व :–

संगीत कला उच्च कोटि की कला स्वीकार की गई है। इस कला की उपासना स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने की थी। संगीत कला एक ऐसी कला है जिसमें मानव को आकर्षित करने की शक्ति व्याप्त है। संगीत के कवेल स्पर्श मात्र से ही मानव विश्व से परे बाहरी आडम्बरों से दूर, दुःख क्लेश तक से भी सम्बन्ध न रखने वाले प्राकृतिक आनन्द को प्राप्त करता है। संगीत के द्वारा मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है।

मुंशी प्रेमचन्द जी का संगीत विषय पर कथन है कि 'मनोव्यथा जब असहाय और अपार हो जाती है, जब उसे कोई त्राण नहीं मिलता, जब वह रूदन और क्रन्दन की गोद में भी आश्रय नहीं पाती तो वह संगीत के चरणों में आ गिरती है।''

अन्य मत के अनुसार ''संगीत निःसदेंह मानव के बीच एक सशक्त मध्यस्थ का रूप ले सकता है जिसे कोई चुनौती नहीं दे सकता और इसके साथ–साथ परम्परागत दृष्टि से व्यक्ति को परम हर्षोन्नाद की स्थिति तक ले जाने योग्य है।''

संगीत एक आध्यात्मिक कला है जो कि धार्मिक भावनाओं और आंतरिक जीवन से सम्बन्ध रखती है। जहां भौतिक जीवन में संगीत मनोरंजन का साधन है वहां आध्यात्मिक जीवन में यह भगवद् प्राप्ति की ओर प्रेरित करता है। संगीत ऐक्य भावना से ओत–प्रोत है। इसमें ऊंच–नीच, छोटे–बडे का भेद–भाव नहीं है।

अतः संगीत एक अति उतम कला है और ऐसा सौन्दर्य है जो प्राणीमात्र एवं प्रत्येक प्रकार के जड़ चेतन को तत्काल ही अपनी ओर आकर्षित करता है और स्वार्थ को त्यागकर परमार्थ की ओर ले जाता है।

निष्कर्षः–

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि संगीत ललित कलाओं में से एक अति उतम कला है। जो एकता की प्रतीक मानी जाती है। संगीत समारोहों में हिन्दु–मुस्लिम दोनों एक साथ आनन्द प्राप्त कर सकते है। संगीत ही एकमेव लक्ष्य है जहां हम राम–रहीम को एक साथ देखते है। संगीत का अर्थ संगति है। अतः जहां संगीत है वहां संगति है, जहां संगति है वहां प्रेम है।

संगीत भगवान की अमूल्य निधि है, जो धार्मिक एकता के साथ–साथ मानव प्रेम को बढावा देती है।

सन्दर्भ–सूचि :–

भारतीय संगीत का इतिहास, डा0 शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे।

भाव संगीत तथा शास्त्रीय संगीत– श्रीमती कमलिनि श्रीवास्तव संगीत निबन्ध संग्रह, पृ0 ।।।

प्रो0 वि0रा0 आठवले, संगीत कला बिहार, मार्च 1972

शांरगदेव, संगीत रत्नाकर, प्रथम स्वराध्याय।

संगीत कला बिहार – दिसम्बर 2013

संगीत शिक्ष– अंक–जनवरी–फरवरी 1988

संगीत शिक्षा द्वारा भाषा और एकता का प्रचार, डॉ. शंकर लाल मिश्र, संगीत–निबन्ध–संग्रह, सम्पादक हरिशचन्द्र श्रीवास्तव।

संगीत शिक्षा– आरती पब्लिकेशन्ज

संगीत नाटक, जर्नल ऑफ संगीत नाटक अकादमी, संगीत नाटक 10 अक्टूबर–दिसम्बर, 1965

डॉ. मृत्युंजय शर्मा, संगीत मैनुअल।

Corresponding Author

Reenu Sharma*

M. A. Music, (Net, UGC)

E-Mail – arora.kips@gmail.com